**COHERENCE** – The Multidisciplinary Research Journal
Volume No: 17, Issue No: 2, Year: 2026 (July-December)
PP: 21-27
ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

# केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में प्रतिवाद : किसान समस्या एवं किसान अधिकार

**स्वप्ना कुमारी**

हिंदी शिक्षिका ,+२ एम.एल. एकेडमी, लहेरियासराय, दरभंगा

**सारांश**–

हिंदी कविता की प्रगतिशील धारा में केदारनाथ अग्रवाल का महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी कविताएँ केवल प्रकृति-चित्रण तक सीमित नहीं हैं, बल्कि उनमें किसान, मजदूर तथा शोषित वर्ग के जीवन-संघर्ष की सशक्त अभिव्यक्ति मिलती है। उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से सामंती व्यवस्था, पूँजीवादी शोषण तथा सामाजिक विषमता का तीखा प्रतिवाद किया है। उनकी कविताओं में किसान केवल करुणा का पात्र नहीं, बल्कि संघर्षशील, स्वाभिमानी तथा परिवर्तन का वाहक है। प्रस्तुत शोध आलेख में केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं के आधार पर किसान समस्याओं, किसान अधिकारों तथा प्रतिवाद की चेतना का विश्लेषण किया गया है।

**मुख्य शब्द :** केदारनाथ अग्रवाल, प्रतिवाद, किसान, किसान अधिकार, प्रगतिशील कविता, शोषण, सामाजिक न्याय।

**भूमिका**–

हिंदी साहित्य में प्रगतिशील आंदोलन ने साहित्य को जनजीवन से जोड़ने का कार्य किया। इस आंदोलन के कवियों ने समाज के उपेक्षित, शोषित एवं वंचित वर्ग की समस्याओं को अपनी रचनाओं का विषय बनाया। केदारनाथ अग्रवाल ऐसे ही कवि हैं जिन्होंने अपनी कविता में किसान जीवन की वास्तविकता को अत्यंत निकटता से चित्रित किया है। भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर रही है, किंतु विडंबना यह है कि अन्नदाता किसान सदैव आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक शोषण का शिकार रहा। केदारनाथ अग्रवाल ने इस यथार्थ को गहराई से समझा और अपनी कविताओं में किसानों की पीड़ा, संघर्ष तथा अधिकारों की आवाज़ को मुखर किया।

उनकी कविता किसी कल्पनालोक की रचना नहीं है, बल्कि जीवन की कठोर वास्तविकताओं का कलात्मक दस्तावेज़ है। उनकी रचनाओं में किसान की मेहनत, निर्धनता, प्राकृतिक आपदाएँ, साहूकारों का अत्याचार, जमींदारी शोषण तथा सरकारी उपेक्षा का मार्मिक चित्रण मिलता है। साथ ही किसान के आत्मसम्मान, श्रम की गरिमा तथा उसके अधिकारों के प्रति सजग चेतना भी स्पष्ट दिखाई देती है।

**केदारनाथ अग्रवाल का साहित्यिक व्यक्तित्व**–

केदारनाथ अग्रवाल हिन्दी साहित्य के प्रगतिशील काव्य आंदोलन के प्रमुख कवियों में अग्रगण्य हैं। उनका साहित्यिक व्यक्तित्व जनजीवन, प्रकृति, श्रम-संस्कृति और मानवीय संवेदनाओं के सशक्त समन्वय का प्रतीक है। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से सामान्य जन के जीवन-संघर्ष, श्रमिक वर्ग


© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

की पीड़ा, सामाजिक विषमता तथा मानवीय स्वाभिमान को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया। उनकी कविता में यथार्थ जीवन का सहज और प्रामाणिक चित्रण मिलता है, जिसके कारण वे जनकवि के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

केदारनाथ अग्रवाल का साहित्य जीवन के प्रति गहरी आस्था और सकारात्मक दृष्टिकोण से ओत-प्रोत है। वे प्रकृति के अनन्य उपासक थे। उनकी कविताओं में नदी, पर्वत, वृक्ष, खेत, फूल, पक्षी तथा ग्रामीण परिवेश का अत्यंत जीवंत और कलात्मक चित्रण मिलता है। प्रकृति उनके यहाँ केवल सौन्दर्य का विषय नहीं, बल्कि जीवन, श्रम और प्रेम की प्रेरक शक्ति के रूप में उपस्थित होती है। उनकी प्रकृति-दृष्टि मानवीय संवेदनाओं से गहराई से जुड़ी हुई है।

प्रगतिशील विचारधारा से प्रभावित होने के कारण उनकी रचनाओं में सामाजिक न्याय, समानता और शोषण-विरोध की स्पष्ट चेतना दिखाई देती है। वे पूँजीवादी एवं सामंती व्यवस्था की विसंगतियों पर प्रहार करते हुए श्रमिकों, किसानों और वंचित वर्ग के पक्ष में अपनी स्पष्ट प्रतिबद्धता व्यक्त करते हैं। उनकी भाषा सरल, सहज, प्रवाहपूर्ण तथा लोकजीवन से संपृक्त है। उन्होंने बोलचाल के शब्दों और लोक-प्रतीकों का प्रभावशाली प्रयोग कर अपनी कविता को व्यापक जनसमुदाय से जोड़ा।

प्रेम भी उनके साहित्य का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। उनकी प्रेमाभिव्यक्ति शारीरिक आकर्षण तक सीमित न होकर जीवन-सौन्दर्य, आत्मीयता और मानवीय संबंधों की गरिमा को अभिव्यक्त करती है। इस प्रकार केदारनाथ अग्रवाल का साहित्यिक व्यक्तित्व प्रकृति-प्रेम, जनपक्षधरता, यथार्थवाद, प्रगतिशील चेतना तथा मानवीय मूल्यों का समन्वित स्वरूप है। हिन्दी साहित्य में उनका योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण और प्रेरणास्पद माना जाता है।

**प्रतिवाद की अवधारणा**–

प्रतिवाद का अर्थ केवल विरोध करना नहीं है, बल्कि अन्याय, शोषण तथा असमानता के विरुद्ध संगठित चेतना का विकास करना है। साहित्य में प्रतिवाद उस आवाज़ का नाम है जो अन्यायपूर्ण व्यवस्था को चुनौती देती है।

केदारनाथ अग्रवाल के यहाँ प्रतिवाद कई स्तरों पर दिखाई देता है—

- सामंती व्यवस्था का प्रतिवाद।
- पूँजीवादी शोषण का प्रतिवाद।
- किसान एवं मजदूर के शोषण का प्रतिवाद।
- सामाजिक असमानता का प्रतिवाद।
- अन्यायपूर्ण सत्ता व्यवस्था का प्रतिवाद।

उनकी कविताओं में प्रतिवाद क्रोध मात्र नहीं है, बल्कि परिवर्तन की सकारात्मक चेतना भी है।


© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

**किसान जीवन का यथार्थ–**

केदारनाथ अग्रवाल की काव्य-दृष्टि भारतीय जनजीवन, विशेषकर किसान और श्रमिक वर्ग के यथार्थ से गहरे रूप में जुड़ी हुई है। उन्होंने ग्रामीण जीवन को किसी कल्पनालोक या सौंदर्य-बोध के माध्यम से नहीं, बल्कि उसके वास्तविक संघर्ष, श्रम, अभाव और संवेदनाओं के साथ चित्रित किया है। उनकी कविताओं में किसान केवल अन्नदाता नहीं, बल्कि समाज की आर्थिक संरचना का आधार, प्रकृति का सच्चा सहचर और निरंतर संघर्षरत मनुष्य के रूप में उपस्थित होता है। कवि स्वयं ग्रामीण परिवेश से जुड़े होने के कारण किसान के जीवन की कठिनाइयों, उसके श्रम, उसकी आशाओं तथा उसकी पीड़ाओं को अत्यंत निकट से जानते थे। यही कारण है कि उनकी कविताओं में किसान जीवन का चित्रण अत्यंत प्रामाणिक, सजीव और मार्मिक बन पड़ा है।

केदारनाथ अग्रवाल के अनुसार किसान का जीवन निरंतर श्रम का जीवन है। वह सुबह होने से पहले खेतों की ओर निकल जाता है और सूर्यास्त तक कठिन परिश्रम करता रहता है। तपती धूप, कड़ाके की सर्दी अथवा मूसलाधार वर्षा—कोई भी प्राकृतिक परिस्थिति उसके कार्य में बाधा नहीं बनती। उसके श्रम से खेतों में हरियाली आती है, फसलें लहलहाती हैं और समूचे समाज का जीवन चलता है, किन्तु विडंबना यह है कि स्वयं किसान का जीवन अभाव, संघर्ष और असुरक्षा से भरा रहता है। वह अपनी मेहनत का उचित प्रतिफल प्राप्त नहीं कर पाता और अनेक बार उसके परिश्रम का लाभ बिचौलियों, महाजनों अथवा व्यवस्था के अन्य शक्तिशाली वर्गों को मिल जाता है।

कवि किसानों की कठिन परिस्थितियों का ऐसा सजीव चित्र प्रस्तुत करते हैं कि पाठक स्वयं उनकी पीड़ा का अनुभव करने लगता है। खेतों में जलती हुई धूप, समय पर वर्षा न होना, कभी सूखे की मार तो कभी बाढ़ की विभीषिका, फसलों का नष्ट हो जाना, बढ़ता हुआ कर्ज, महँगाई, भूख, बेरोज़गारी तथा आर्थिक अभाव किसान जीवन की स्थायी समस्याएँ हैं। इन परिस्थितियों में किसान अपनी आजीविका बचाने के लिए निरंतर संघर्ष करता रहता है। अनेक बार उसकी पूरी वर्षभर की मेहनत प्राकृतिक आपदाओं या बाजार की अस्थिरता के कारण नष्ट हो जाती है, फिर भी वह निराश होकर बैठ नहीं जाता, बल्कि नए उत्साह के साथ पुनः खेतों में उतर जाता है। यही उसकी जिजीविषा और कर्मनिष्ठा है, जिसे केदारनाथ अग्रवाल ने अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। केदारनाथ अग्रवाल का किसान किसी रोमानी कल्पना का पात्र नहीं है, बल्कि वास्तविक जीवन का संघर्षरत मनुष्य है। उसकी खुशियाँ छोटी हैं और दुख बड़े, फिर भी वह जीवन के प्रति विश्वास नहीं खोता। वह धरती को अपनी माँ मानकर उससे गहरा आत्मीय संबंध स्थापित करता है। उसकी आशाएँ ऋतुओं के साथ बदलती हैं और उसकी संवेदनाएँ मिट्टी, बीज, जल तथा फसलों से जुड़ी रहती हैं। कवि किसान के श्रम को केवल आर्थिक गतिविधि नहीं मानते, बल्कि उसे सृजन, जीवन और सभ्यता की निरंतरता का आधार मानते हैं। किसान का श्रम ही समाज को भोजन, समृद्धि और जीवन प्रदान करता है, इसलिए कवि उसके प्रति गहरा सम्मान व्यक्त करते हैं।


© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में किसान जीवन के यथार्थ का चित्रण केवल करुणा उत्पन्न करने के लिए नहीं है, बल्कि सामाजिक चेतना जगाने के उद्देश्य से भी किया गया है। वे यह स्पष्ट संकेत देते हैं कि जिस किसान के श्रम पर संपूर्ण समाज निर्भर है, यदि उसका जीवन ही अभावग्रस्त और शोषित रहेगा तो सामाजिक विकास अधूरा रहेगा। उनकी कविताएँ किसानों की समस्याओं को सामने लाकर सामाजिक न्याय, आर्थिक समानता और मानवीय संवेदना की आवश्यकता पर बल देती हैं। इस प्रकार केदारनाथ अग्रवाल ने किसान जीवन के संघर्ष, श्रम, आत्मसम्मान, धैर्य और जिजीविषा का अत्यंत यथार्थ, संवेदनशील और प्रभावशाली चित्र प्रस्तुत किया है, जो उनके काव्य को जनजीवन की सच्ची अभिव्यक्ति बनाता है।

**किसान समस्या का चित्रण**–

**(1) आर्थिक शोषण**–

भारत का किसान लंबे समय तक जमींदारों और साहूकारों के शोषण का शिकार रहा। किसान की मेहनत का अधिकांश भाग दूसरों के हाथों चला जाता था। केदारनाथ अग्रवाल इस शोषण के विरुद्ध अपनी कविता में तीखा प्रतिवाद करते हैं। उनका मानना है कि जो व्यक्ति धरती को उपजाऊ बनाता है, उसी को सबसे अधिक अभावों में जीवन बिताना पड़ता है।

**(2) कर्ज की समस्या**–

किसान का जीवन ऋण के बोझ से दबा रहता है। बीज, खाद, सिंचाई तथा खेती के अन्य साधनों के लिए उसे साहूकारों से कर्ज लेना पड़ता है। कवि बताते हैं कि किसान अपनी पूरी जिंदगी ऋण चुकाने में ही लगा रहता है, फिर भी वह कर्ज से मुक्त नहीं हो पाता।

**(3) प्राकृतिक आपदाएँ**–

सूखा, बाढ़, ओलावृष्टि तथा वर्षा की अनिश्चितता किसान के जीवन को लगातार प्रभावित करती है। केदारनाथ अग्रवाल प्रकृति के कवि अवश्य हैं, लेकिन वे प्रकृति की विनाशकारी भूमिका को भी स्वीकार करते हैं। प्राकृतिक विपदाएँ किसान के जीवन को संकटग्रस्त बना देती हैं।

**(4) श्रम का उचित मूल्य न मिलना**–

किसान कठोर परिश्रम करता है, लेकिन उसकी उपज का उचित मूल्य नहीं मिलता। इस समस्या को कवि ने सामाजिक अन्याय के रूप में देखा है। उनका स्पष्ट मत है कि श्रमिक और किसान के श्रम का सम्मान होना चाहिए।

**किसान अधिकारों की चेतना**–

केदारनाथ अग्रवाल की कविता में किसान केवल करुणा का पात्र नहीं है, बल्कि अपने अधिकारों के प्रति सजग, संघर्षशील और परिवर्तन का वाहक है। प्रगतिशील काव्यधारा के प्रमुख कवि होने के कारण उन्होंने किसानों की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण करने के साथ-


© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

साथ उनके अधिकारों की भी सशक्त वकालत की है। उनकी दृष्टि में किसान राष्ट्र की अर्थव्यवस्था का आधार है, इसलिए उसे सम्मानजनक जीवन, न्यायपूर्ण व्यवस्था तथा श्रम का उचित प्रतिफल मिलना चाहिए।

केदारनाथ अग्रवाल बार-बार इस तथ्य को रेखांकित करते हैं कि किसान धरती का वास्तविक सृजनकर्ता है। वह अपने श्रम से बंजर भूमि को भी उपजाऊ बनाता है, इसलिए उसे अपनी उपज का उचित मूल्य प्राप्त होना चाहिए। उनकी कविताओं में भूमिहीन किसानों को भूमि का अधिकार, शोषण से मुक्ति, साहूकारों और जमींदारों के अत्याचारों का अंत तथा श्रमिक वर्ग के सम्मानपूर्ण जीवन की मांग स्पष्ट रूप से व्यक्त होती है। उनकी प्रसिद्ध कविता 'यह धरती है उस किसान की' में कवि किसान को धरती का वास्तविक स्वामी मानते हुए कहते हैं—

"यह धरती है उस किसान की,
जो मिट्टी का पूर्ण पारखी,
जो मिट्टी के संग-साथ ही
तपकर, गलकर, जीकर, मरकर
खपा रहा है जीवन अपना।"

इन पंक्तियों में कवि किसान के श्रम, त्याग और उसके स्वामित्व के अधिकार को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से स्थापित करते हैं। यह केवल भावात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि किसान के सामाजिक और आर्थिक अधिकारों की घोषणा है।

केदारनाथ अग्रवाल की काव्य-दृष्टि किसानों को संगठित होकर अन्याय और शोषण के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा भी देती है। वे मानते हैं कि जब तक किसान अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं होगा, तब तक सामाजिक समानता और आर्थिक न्याय की स्थापना संभव नहीं है। उनकी कविताएँ किसानों में आत्मसम्मान, श्रम की गरिमा और अधिकार-चेतना का संचार करती हैं। वे शासन और समाज दोनों से अपेक्षा करते हैं कि किसानों को शिक्षा, स्वास्थ्य, सिंचाई, ऋण-सुविधा, आधुनिक कृषि संसाधन तथा उनकी उपज का न्यायोचित मूल्य उपलब्ध कराया जाए।

इस प्रकार केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में किसान अधिकारों की चेतना केवल साहित्यिक संवेदना तक सीमित नहीं रहती, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक समानता और मानवीय गरिमा की स्थापना का सशक्त माध्यम बन जाती है। उनकी कविता भारतीय किसान के अधिकारों, संघर्ष और सम्मानपूर्ण जीवन की प्रखर आवाज़ के रूप में आज भी अत्यंत प्रासंगिक है।

**1. श्रम का सम्मान**– कवि मानते हैं कि समाज का वास्तविक निर्माता किसान है। इसलिए उसे सम्मान मिलना चाहिए।

**2. आर्थिक न्याय**–किसान को उसकी उपज का उचित मूल्य मिले तथा शोषण समाप्त हो।


© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

**3. भूमि पर अधिकार**– जो व्यक्ति भूमि पर खेती करता है, उसी का उस भूमि पर अधिकार होना चाहिए।

**4. समान अवसर**– ग्रामीण समाज को शिक्षा, स्वास्थ्य तथा रोजगार की समान सुविधाएँ प्राप्त हों। केदारनाथ अग्रवाल की कविता में संघर्ष चेतना कवि किसानों को केवल दयनीय स्थिति में नहीं दिखाते बल्कि उन्हें संघर्ष के लिए प्रेरित भी करते हैं। उनकी कविता में किसान अन्याय के सामने झुकने वाला नहीं बल्कि परिवर्तन का वाहक बनकर सामने आता है।

उनकी कविताओं में यह संदेश निहित है कि–

- श्रम सबसे बड़ी शक्ति है।
- अन्याय स्थायी नहीं होता।
- संगठित संघर्ष परिवर्तन ला सकता है।
- किसान समाज का वास्तविक निर्माता है।
- सामाजिक न्याय की स्थापना

केदारनाथ अग्रवाल समानता पर आधारित समाज की कल्पना करते हैं। वे ऐसे समाज का निर्माण चाहते हैं जहाँ किसान, मजदूर तथा श्रमिक सम्मानपूर्वक जीवन जी सकें।

उनकी कविता सामाजिक न्याय, लोकतांत्रिक मूल्यों तथा मानवीय गरिमा की स्थापना की पक्षधर है।

**निष्कर्ष**–

केदारनाथ अग्रवाल हिन्दी साहित्य के उन प्रगतिशील कवियों में अग्रणी हैं जिन्होंने कविता को केवल सौन्दर्यबोध या भावाभिव्यक्ति का माध्यम न मानकर सामाजिक परिवर्तन का प्रभावशाली साधन बनाया। उनकी कविताओं में किसान, मजदूर तथा श्रमजीवी वर्ग के जीवन-संघर्ष, पीड़ा, अभाव और आत्मसम्मान का अत्यंत यथार्थ एवं संवेदनशील चित्रण मिलता है। प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि केदारनाथ अग्रवाल ने भारतीय किसान की समस्याओं को केवल करुणा के स्तर पर नहीं देखा, बल्कि उनके मूल कारणों–सामंती शोषण, आर्थिक विषमता, ऋणग्रस्तता, प्राकृतिक आपदाओं तथा व्यवस्था की उदासीनता–को रेखांकित करते हुए उनके विरुद्ध सशक्त प्रतिवाद प्रस्तुत किया है।

उनकी कविताओं का प्रतिवाद नकारात्मक विरोध नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, समानता और मानवीय गरिमा की स्थापना का रचनात्मक प्रयास है। वे किसान को राष्ट्र की आर्थिक व्यवस्था का आधार मानते हैं तथा उसके श्रम, अधिकार और सम्मान को सर्वोच्च महत्व प्रदान करते हैं। उनकी काव्य-दृष्टि में किसान केवल पीड़ित व्यक्ति नहीं, बल्कि परिवर्तन का वाहक, संघर्ष का प्रतीक और समाज का वास्तविक निर्माता है। इसलिए उनकी कविताएँ किसानों में आत्मविश्वास, अधिकार-चेतना तथा संगठित संघर्ष की प्रेरणा उत्पन्न करती हैं।

केदारनाथ अग्रवाल की भाषा सरल, सहज, लोकजीवन से संपृक्त तथा अत्यंत प्रभावशाली है, जिसके कारण उनकी कविताएँ व्यापक जनसमुदाय तक पहुँचती हैं। उन्होंने लोक-प्रतीकों, ग्रामीण बिंबों और


© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

श्रम-संस्कृति के माध्यम से भारतीय किसान के जीवन को साहित्य में स्थायी स्थान प्रदान किया। उनकी रचनाएँ आज भी किसानों की समस्याओं, कृषि संकट, आर्थिक असमानता तथा सामाजिक न्याय जैसे समकालीन प्रश्नों के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक हैं।

अतः कहा जा सकता है कि केदारनाथ अग्रवाल की कविताएँ भारतीय किसान के संघर्ष, श्रम, अधिकार और स्वाभिमान की सशक्त अभिव्यक्ति हैं। उनका काव्य जनपक्षधरता, प्रगतिशील चेतना और मानवीय मूल्यों का जीवंत दस्तावेज़ है। आज के वैश्वीकरण और बदलती कृषि व्यवस्था के दौर में भी उनकी कविताएँ सामाजिक समानता, श्रम के सम्मान तथा किसान अधिकारों की रक्षा के लिए प्रेरणा प्रदान करती हैं। इसी कारण उनका काव्य हिन्दी साहित्य में प्रतिवाद और जनचेतना का एक महत्त्वपूर्ण मानदण्ड माना जाता है।

**संदर्भ**–

1. अग्रवाल, केदारनाथ. फूल नहीं रंग बोलते हैं। इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
2. अग्रवाल, केदारनाथ. युग की गंगा। इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
3. अग्रवाल, केदारनाथ. आग का आईना। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
4. अग्रवाल, केदारनाथ. केदारनाथ अग्रवाल रचनावली। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
5. शर्मा, रामविलास. प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
6. शर्मा, रामविलास. भारतीय साहित्य की भूमिका। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
7. पाण्डेय, मैनेजर. साहित्य और इतिहास दृष्टि। नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
8. नामवर सिंह. कविता के नए प्रतिमान। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
9. नामवर सिंह. इतिहास और आलोचना। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
10. मिश्र, शिवकुमार. प्रगतिवाद। नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।


© Copyright @ Authors